वारी रे वारी

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।।

सुन्दर सरूप स्याम स्यामा जी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।।

इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़्यो अति भारी।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी।।

कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी।।

सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर पा तुमारी
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी।।